

चाक्षुषोपनिषद्

दाहिने हाथ में जल लेकर सबसे पहले विनियोग:- ॐ अस्याश्चाक्षुषी विद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः, गायत्री छंदः, सूर्यो देवता, चक्षुरोगनिवृत्तये विनियोगः।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजः स्थिरो भव। मां पाहि पाहि। त्वरितं चक्षु रोगान् शमय शमय। मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय। यथा अहमन्धो न स्यां तथा कल्पय -कल्पय। कल्याणं कुरु-कुरु। यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय-निर्मूलय। ॐ नमः चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय। ॐ नमः *करुणाकराय अमृताय। ॐ नमःसूर्याय। ॐ नमो भगवते सूर्याय अक्षितेजसे नमः। खेचराय नमः। महते नमः। रजसे नमः। तमसे नमः। असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मा अमृतंगमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः। हंसो भगवान् शुचिर प्रतिरूपः। य इमां **चाक्षुष्मतिविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते न तस्या क्षिरोगो भवति। न तस्य कुले अन्धो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग् ग्राहयित्वा विद्या सिद्धिर्भवति। ओम नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा। ॐ विश्वरूपिणं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं। तपन्तं सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः।।

पाठभेदः - * कल्याणकराय । ** चाक्षुष्मर्तो ।

विधिः -

1. अनार की शाखा की कलम से हल्दी का घोल से निम्न बत्तीसी यन्त्र को कांसे का थाली पर लिखें।
2. उक्त यन्त्र पर तांबे की कटोरी में चतुर्मुखी बत्ती का दीपक जलाकर गन्धाक्षतपुष्पादि से पूजा करें।
3. पूर्वाभिमुख बैठकर हल्दी का गांठ की माला से 1 माला निम्न मन्त्र का जप करें -
'ॐ मम (यजमानस्य वा) चक्षु रोगान्शमय शमय।'
4. तत्पश्चात् निम्न बीज मन्त्र का 6 माला जप करें - 'ॐ ह्रीं हंसः।'
5. अब चाक्षुषोपनिषद् का कम से कम 12 बार पाठ करें।
6. अब पुनः उक्त बीज मन्त्र का 6 माला जप करें।
7. पाठ करने के उपरान्त सूर्यदेवता को गंध से युक्त जल से अर्घ्य दें और उस जल को ओखों पर लगाना चाहिए।

बत्तीसी यन्त्र -

8	15	2	7
6	3	12	16
14	9	8	1
4	5	10	13

सूर्या गायत्री मंत्र

ओम आदीत्याय वीदमहे सहस्रा किरनाय धीमाही तान्नो भानु प्रचोड़ायात

एक और सूर्या मंत्र

ओम ह्रिमि घृणीही सूर्या आदित्या श्रीं ओम (10 या 28 बार)

ललितम मंत्र

ललिताम लंबोदराम् ललिताम भस्करम ललितम बालाचंद्रम

राम मंत्र

ओम नामो रामजी धनी लक्ष्मण के बान आँख दर्द करे तो लक्ष्मण कुवार की

आन

मेरी भक्ती गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईस्वरो वाचा सत्या नाम आदेश गुरु को

(10,000 बार पड़ने से सिद्धि मिलती है. उसके बाद हर बार कहने से फल

मिलेगा. दीवाली के दिन 144 बार पड़ना)

हनुमान मंत्र

अंजनी गर्भा संभूतम कुमाराम ब्रह्मचरिनम दृष्टि दोषा विनाशर्त हनुमंत

स्मरम्याहाँ

Another mantra

ओम मँम नेत्रा ज्योति जागरा जागरा ओम शांति

After meals

(खाने के बाद, मूह मे पानी लेके, ये मंत्र साथ बार पड़ना)

आपातस्च सूकन्यस्च बन मे शन्क्रसआन श्यान

(फिर पानी बाहर थूकना)

॥ चाक्षुषोपनिषत् ॥

अस्याश्चक्षुषी विद्यायाः अहिर्बुध्न्य ऋषिः ।
गायत्री छंदः । सूर्योदिवता । चक्षुरोगनिवृत्तये विनियोगः ।

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजस्थिरोभव । मां पाहि पाहि ।
त्वरितम् चक्षुरोगान् शमय शमय । ममाजातरूपं तेजो
दर्शय दर्शय । यथाहमंधोनस्यां तथा कल्पय कल्पय ।
कल्याण कुरु कुरु । यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक
दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय ।
ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय ।
ॐ नमः कल्याणकराय अमृताय । ॐ नमः सूर्याय ।
ॐ नमो भगवते सूर्याय अक्षितेजसे नमः ।
खेचराय नमः । महते नमः । रजसे नमः । तमसे नमः ।
असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्मां अमृतं गमय । उष्णो भगवान्छुचिरूपः ।
हंसो भगवान् शुचिप्रतिरूपः । य इमां चाक्षुष्मतीं
विद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीयते न तस्य अक्षिरोगो भवति ।
न तस्य कुले अंधो भवति । न तस्य कुले अंधो भवति ।
अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति ।
विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं
तपंतं सहस्ररश्मिः शतधावर्तमानः पुरःप्रजानामुदयत्येष
सूर्यः । ॐ नमो भगवते आदित्याय ।

This upanishhat.h ma.ntra is to be recited daily twelve times as there are said to be twelve Suns or Aditya. While reciting the ma.ntra, a copper or silver glass/vessel with little amount of water inside should be held in front to purify the water inside. At the end, the water should be applied to eyes by fingers and then should be drunk.

Another ma.ntra from Rigveda (10-158) can also be recited.

चक्षुर्नो देवः सविता चक्षुर्न उत पर्वतः ।
चक्षुर्धाता दधातु नः । चक्षुर्नो धेहि चक्षुषे
चक्षुर्विष्ये तनूच्यः । संचेदं विच पश्येम ।

Meaning of Chakshushopanishad

This Chaakshushhohanishhad is in Sanskrit. This is a stotra of God Surya. Anybody reciting this stotra daily with concentration, faith and devotion becomes free from all eye diseases.

1. Ahirbughnya is Rushi of this Chaakshushi Vidya. Gayatri is Chanda, and God Surya is devata of this Chaakshushi Vidya. I am reciting this vidya for removing my eye disease.

2 Om! O! God Surya let your luster, light be settled in my eyes. Please protect me. Protect me. Please remove my eye disease immediately. Remove my eye disease immediately.

3 Please show me your gold like luster. Please show me light which shows your power. Please make something and see that I will not become blind. Please think about my welfare. Bestow welfare to me.

4 I had committed sins in my previous births which are resulting in my eye disease. Please make me free from this bad effect of my sins and remove all my sins of my earlier births also.

5 Om! I bow God Bhaskara (surya) since you are the cause of creating light, luster in my (everybody's) eyes. Om! Very kind God Surya, you are nectar (Amrut). Hence I bow to you. I bow to god Surya.

6 Om! I bow to him (God Surya) who is Luster of my eyes. I bow to him (God Surya) who is always sporting (travelling) in the sky. I bow to him (God Surya) who is behind everybody's inspiration of (Rajo guna) doing something useful. I bow to him (God Surya) who has given shelter to darkness (tamo guna).

7 O! God Surya, please lead me to the truth from non truth. O! God Surya, please raise me to light from darkness. O! God Surya, please make me immortal from mortal.

8 God Surya is representing heat and He is very pious and pure. His luster and light is very powerful and beyond comparison. There is nobody as lustrous as God Surya. Anybody reciting this chakshushopanishad every day becomes free from eye diseases. He will never be a victim of eye disease. Not only has that but nobody from his family become blind. Anybody who teaches (donates) this chakshushi vidya to eight Brahmins, and then this vidya becomes very powerful to him.

Thus here completes this Krishna Yajurvediya chakshushopanishad.